॥ जलमणिका ॥

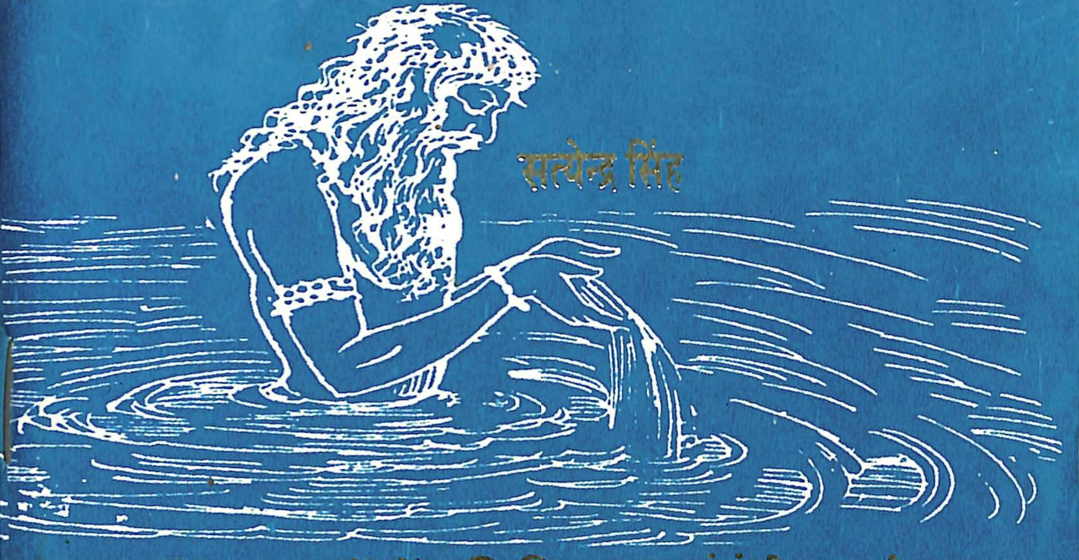

सत्येन्द्र सिंह

धार्मिक ग्रन्थों में उल्लिखित जल संबंधी सन्दर्भ गुटका

।। जलमणिका ।।

धार्मिक ग्रन्थों में उल्लिखित जल संबंधी सन्दर्भ गुटका

संयोजन : सत्येन्द्र सिंह

प्रथम संस्करण : अगस्त, 2006

मूल्य : रुपए दस मात्र

प्रकाशक : तरुण भारत संघ
भीकमपुरा-किशोरी, वाया थानागाजी,
अलवर-301 022 (राजस्थान)
दूरभाष : 01465-225043

वितरक : जल बिरादरी
34/46, किरण पथ,
मानसरोवर, जयपुर-302 020 (राजस्थान)
दूरभाष : 0141-2393178

रूपांकन एवं मुद्रण : कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

॥ जलमणिका ॥

सत्येन्द्र सिंह

धार्मिक ग्रन्थों में उल्लिखित जल संबंधी सन्दर्भ गुटका

अनुक्रमणिका

1. प्रिय पाठक !
2. वेद और जल
3. पुराण और जल
4. मनुस्मृति
5. महाभारत
6. चाणक्य नीति
7. सिक्ख धर्म
8. इस्लाम धर्म
9. ईसाई धर्म
10. अन्य धर्म
11. मित्रता का प्रतीक धर्म
12. आह्वान

प्रिय पाठक !

मैं तरुण भारत संघ का कार्यकर्ता हूं। मेरी पृष्ठभूमि किसान परिवार से है। सन् 1985 से ही संस्था के लेखा-जोखा संबंधी व्यवस्था में व्यस्त रहा, फिर भी समय-समय पर कुछ न कुछ पढ़ने की प्रवृत्ति बनी रही। इसी तरह कितना लम्बा समय गुजर गया...पता नहीं चला। संस्था भी समाज की सहभागिता से जल संरक्षण के कार्यों को करती रही है। समाज भी उससे लाभान्वित होता रहा है। इन बीस वर्षों में मैंने पानी का प्रताप और जस... दोनों अपनी आंखों से देखा है।

तरुण भारत संघ के काम से आज इसका कार्यक्षेत्र तो पानीदार हुआ ही, भारत के दूसरे क्षेत्रों में भी पानी की चिन्ता करने का मानस बना है। हालांकि तरुण भारत संघ आज भी अर्जुन की आंख की भांति परम्परागत तरीके से जल संरक्षण के कठिन लक्ष्य की प्राप्ति में जुटा है, किंतु इस बीच परिस्थितियां बदली हैं। जल सरीखा

अनुपम उपहार उपभोग की वस्तु के रूप में देखा जाने लगा है। आज बाजार ने जल पर अपनी गिद्ध दृष्टि गड़ा दी है। जहां पर्याप्त पानी उपलब्ध है, वहां बड़े-बड़े उद्योग स्थापित किए जा रहे हैं। पानी का व्यापार करने वाली देशी-विदेशी कम्पनियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। आज सब बोतलबंद पानी गर्व से पीते हैं। किसी को पानी खरीदते-बेचते शर्म नहीं आती। मैं हतप्रभ हूं कि हमारा जल दर्शन हमारे ही देश में लुप्त हो रहा है।

भारतीय दर्शन में पानी 'जीवन' है। जहां पानी है, वहां सुन्दर प्राकृतिक छटा है। इसे देख-देखकर हृदय आनन्दित होता है। क्यों न हो?... पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जंगल, लता... सभी पानी का सुख चाहते हैं। हमारे पुराणों, वेदों और धर्म ग्रन्थों में पानी की हर बूंद का संरक्षण करने का मत है। वेद-पुराण के अनुसार जल ही सृष्टि की पहली रचना है। वेदों में जल को सर्व-सुखदाता, सर्व-शक्तिदाता और अमृत-रूप प्राण माना है। पुराणों में जल संरक्षित करने हेतु तालाब, सरोवर, कुएं, बावड़ी आदि संरचनाओं

के निर्माण की प्रतिष्ठा विधियों को बताया गया है। तालाब, कुएं और बावड़ी बनाने का महत्व भी बहुत ही सजीव रूप से वर्णित है। इन्हीं के कारण भारतीय सभ्यता व संस्कृति में युगों-युगों से जल-संरक्षण की जीवन शैली संरक्षित रही है।

अगर मैं भारतीय जल दर्शन की कहूं तो यहां जल, उसे संरक्षित करने वाला राज-समाज, व्यक्ति और संरचना सभी का महत्व ईश्वरीय था। जलदान सदैव ही पुण्य कार्य देने वाला था। जलदान के लिए प्याऊ, कुएं, तालाब आदि के निर्माण को बड़ा पुण्य व यश माना जाता था। छोटे से पक्षी द्वारा किए जल संरक्षण की छोटी कोशिश और एक राजा के द्वारा कराए गए बड़े-बड़े निर्माण कार्य का बराबर फल कहा गया था। हमारे पूज्य वेद अपनी-अपनी तरह से पानी की स्तुति करते हैं। हमारे 18 पुराणों में भी जल की महिमा का वर्णन है। श्रीमद् भगवत्गीता जैसा धार्मिक ग्रन्थ भी पानी के महत्व को हमारे सामने रखता है। इतने विराट् दर्शन के बावजूद पानी बाजार की वस्तु कैसे बना ?

यह एक विचारणीय प्रश्न है।

क्या समाज के चलन में अब हमारी जल संस्कृति के लिए कोई स्थान नहीं बचेगा ? यही उधेड़-बुन मुझे परेशान करती रही है। संयोगवश इस बीच मुझे संस्था में रखी कुछ धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने का मौका मिला। मैंने पढ़ा तो मुझे गर्व हुआ। हमारे ग्रन्थों में जाने कितना अनमोल खजाना भरा पड़ा है। मैंने पहले भी बहुत सी जल संबंधी पुस्तकों में पढ़ा है। सभी ने कहा है कि जल पंच महाभूतों में से एक है। जल जीवन है। हमारी धार्मिक पुस्तकों में भी जल के विषय में अधिकतर यही लिखा मिला। मेरे मन में आया कि आज भारत के परम्परागत ज्ञान की दुनिया में पूछ हो रही है। स्वामी रामदेव का योगज्ञान लोगों को चमत्कृत कर रहा है। जोहड़ों को संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठन ने ' द बेस्ट प्रेक्टिस' कहा। हमें अपने ग्रंथों में झांकना चाहिए। मैं दावा कर सकता हूं कि हमारा परम्परागत ज्ञान आधुनिक संकट का व्यावहारिक समाधान है।

मैं चाहता हूं कि आप भी पानी की गहराई में उतरें। इसीलिए धर्मग्रन्थों में जल संबंधी वर्णन की संदर्भिका के रूप में 'जलमणिका' आपके हाथों में है। इसे तैयार करने में वेबसाइटों के माध्यम से भी मैंने जानकारी हासिल की। इस काम में पंकज भट्ट ने पूरा सहयोग दिया और हिन्दी अनुवाद भी उन्होंने ही किया। मेरे मन में आए विचार को किताब का रूप देने में श्री अरुण तिवारी का बराबर सहयोग मिला। मैं आभारी हूँ।

'जलमणिका' गुटका दुनिया के सभी धर्मों को अपने में समाहित किए हुए जल की जानकारी देती है। संक्षेप में यह भी बताती है कि जल का कितना और कैसे उपयोग हो ? जल को दुनिया का समाज कैसे देखता रहा है ? धार्मिक पुस्तकों ने समाज को जल के प्रति कैसे सचेत तथा नियमबद्ध किया है ? धार्मिक विचार धाराओं के अनुसार जल सर्व-धर्म स्वीकार्य जीवन दृष्टि देता है। 'जल मणिका' समाज की एक जीवन-पद्धति के रूप में हमारे सामने है। जल प्रेमी और

अनुसंधानकर्ताओं का मार्गदर्शन करने में भी जलमणिका मददगार सिद्ध होगी। ऐसा विश्वास है।

'जलमणिका' यदि एक प्रतिशत प्रिय पाठकों के मन में भी अपने धर्मग्रन्थों के जल दर्शन व संस्कृति को जानने और व्यवहार में उतारने की ललक जगा सकी, तो मुझे संतोष होगा।

आपका

सत्येन्द्र सिंह

तरुण भारत संघ, अलवर (राज.)

वेद और जल

हमारे पूजनीय चतुर्वेदों में जल को 'आपो देवता' से संबोधित कर जल की महिमा, महत्ता, गुण, उससे प्राप्त परम शक्ति, सुख व शान्ति की स्तुति की गई है। वेदों में जल की महत्ता का वर्णन विस्तार से मिलता है। किंतु हम यहां संक्षेप में कुछ चुनिंदा सूक्तियों का संदर्भ आपको भेंट कर रहे हैं।

ऋग्वेद संहिता

ऋग्वेद संहिता भाग एक में 'अप्' शब्द का अर्थ जल कहा गया है। जल विभिन्न रूपों में देखा गया है। यदि हम वेदों में उल्लिखित संदर्भों को देखें तो पता चलता है कि जल कहीं मित्रता का प्रतीक है, तो कहीं जीवन देने का। ऋग्वेद में ऐसे पूर्ण सूक्त (7.47.,7.49 तथा 10.14) मौजूद हैं, जो जल को देवता मानकर संबोधित करते हैं। जल प्रवाहों, मेघों और नदियों के लिए "आपो: देवता:" संबोधन प्रयुक्त हुआ है।

दुरित (अनिष्ट) आदि के निवारणार्थ जल का आह्वान किया गया है।

इदमाप: प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि। (ऋ. 1.23.22)

वे भिषज के रूप में भी माने गये हैं।

यूयं हिष्ठा भिषजो मातृतमा। (ऋ 6.50.7)

आप: को पवित्र (कारक) भी माना गया।

आपो वै पवित्रम (काठ सं.8.8)

आप: को प्राण रूप में भी कहा गया है।

आपो वै प्राणा: (शत. ब्रा. 3.8.2.4)

इस लोक के जल रूपी अमृत को सभी का प्रतिष्ठा का आधार भी कहा गया है;

आपो वाऽआप सर्वस्व प्रतिष्ठा (शत.ब्रा.4.5.2.14)

अतैव जल को सम्पूर्ण जगत् का आकार कहा गया है।

अमृतं वा एतदस्मिन् लोके यदाप: (ऐत.ब्रा.सं.20)।....

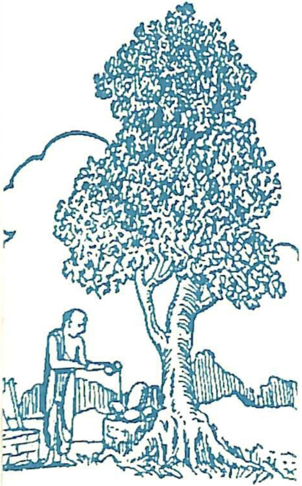

ऋग्वेद कहता है कि यज्ञ की इच्छा करने वालों के सहायक मधुर रस रूप जल-प्रवाह, माताओं के सदृश पुष्टिप्रद हैं। वे दुग्ध को पुष्ट करते हुए मार्ग से गमन करते हैं अर्थात् जल जिस मार्ग से बहता है, उसे दूध की भांति पौष्टिक बनाता चलता है।

जो जल सूर्य में समाहित है अथवा जितने तरह के जल के साथ सूर्य का सान्निध्य है, ऐसे पवित्र जल हमारे यज्ञ को उपलब्ध हों।

हमारी गायें जिस जल का सेवन करती हैं, उस जल का हम स्तुतिगान करते हैं। अन्तरिक्ष एवं भूमि पर प्रवाहमान उस जल के निमित्त हम हवि... समिधा अर्पित करते हैं।

जल में अमृतोपम गुण है। जल में औषधीय गुण है। हे देवो ! ऐसे जल की प्रशंसा से आप उत्साह प्राप्त करें।

सोमदेव ने कहा है कि जल समूह में सभी औषधियां समाहित हैं। जल में ही सर्व सुखप्रदायक अग्नितत्व भी समाहित है। सभी औषधियां जल से ही प्राप्त होती हैं।

हे जल समूह ! जीवन औषधियों को हमारे शरीर में स्थित करें, जिससे हम निरोग होकर चिरकाल तक सूर्यदेव का दर्शन करते रहें।

हे जलदेव ! हम याजकों ने अज्ञानवश जो दुष्कृत्य किए हों, जान-बूझकर किसी से द्रोह किया हो, सत्पुरुषों पर आक्रोश किया हो अथवा असत्य आचरण किया हो...इस प्रकार के हमारे जो भी दोष हों, उन सभी को बहाकर दूर करें।

आज हमने जल में प्रविष्ट होकर अवभृथ स्नान किया है। इस प्रकार जल में प्रवेश करके हम रस से आप्लावित हुए हैं। हे पयस्वान् ! हे अग्निदेव ! आप हमें वर्चस्वी बनाएं। हम आपका स्वागत करते हैं।

देवत्व को प्राप्त करने के लिए भूमि पर प्रवाहित भव्य, पापरहित, मधुर रस युक्त तथा सोम का पान करने के रूप में जल देव की स्तुति की गई है। जल देवता ही हर प्रकार से पवित्र करके प्राणियों को प्रसन्न व तृप्त करते हैं। वह विघ्न नहीं डालते। सूर्य देव की रश्मियों की जल के वाहन के रूप में स्तुति की गई। जल धाराओं से धन-धान्य पूर्ण तथा कल्याणप्रद रूप में स्तुति की गई है। सूक्त 49 में सभी प्रकार के जल की स्तुति है। समुद्र के जल को ज्येष्ठ रूप कहा है तो वर्षा जल को दिव्य जल कहते हैं। नदियों का जल गतिशील हैं। जमीन से कुएं खोद कर व स्वयं स्रोतों के द्वारा प्रवाहित होकर जल कण पवित्रता बिखेरते हुए समुद्र की ओर जाते हैं। जिस जल में वरुण, सोम व अग्नि देव निवास करते हैं, ऐसे दिव्य जल की स्तुति करते हुए कहा है कि हे ! दिव्ययुक्त जल हमारी रक्षा करो।

छठा मण्डल, सूक्त 56 के 7वें श्लोक में जल की स्तुति में कहा है कि हे जल देवता! आप समस्त स्थावर जंगम को उत्पन्न करने वाले हैं। आप मनुष्यों के हितैषी हैं।

हमारे पुत्र-पौत्रादि की रक्षा के निमित्त अन्न प्रदान करने हेतु आप माताओं से भी श्रेष्ठ चिकित्सक हैं। आप हमारे विकारों को नष्ट करें।

श्लोक 3 में सम्पूर्ण विश्व को तृप्तिकर्ता के रूप में स्तुति की है; वहीं 4,5,6,7,2 श्लोकों में कहा है कि जल तत्व में सम्पूर्ण औषधि रस है और वह संसार के लिए सुखदायक तथा दीर्घायुदाता है। श्लोक 8 और 9 में द्वेष भाव, आक्रोश, वश, तारण, प्रयोग, शुद्ध और पवित्र बनाये रखने हेतु स्तुति की है। जल को आश्रयदाता भी कहा गया है ।

सूक्त 12 के श्लोक 6 में अग्निदेव से की स्तुति में वेद कहता है कि जो अमृत स्वरूप गुणों से सम्पन्न और नाना रूपों में संव्याप्त है और यम के अपराधों को क्षमा करता है, ऐसे अग्निदेव से ऐसे जल को संरक्षण करें।

यजुर्वेद संहिता

यजुर्वेद संहिता में जल की महिमा व गुणों को विभिन्न मंत्रों से स्पष्ट किया गया है। दूसरे अध्याय के 65वें मंत्र में जल स्तुति इस प्रकार है।

उर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् ।

स्वधा स्थ तर्पयत् मे पितृन ।।

हे जल समूह ! अन्न, घृत, दूध तथा फलों में 'आप-रस' विद्यमान हैं। इसीलिए ये सभी रस अमृत के समान सेवनीय तथा धारक शक्ति को बढ़ाने वाले हैं। अतः इनसे हमारे पितृगणों को तृप्त करो।

चौथे अध्याय (श्लोक 1-2) में यजु. (129-130 मंत्र)

में भी जल की स्तुति की गई है।

एदमगन्म देवयजनं पृथिव्या यत्र देवासो अजुषन्तविश्वे ।
ऋक्सामाभ्या सन्तरन्तो यजुर्भी रायस्पोषेण समिषा मदेम ।
इमाऽ आपः शमु मे सन्तु देवीरोषधे त्रायस्व स्वधिते मैन उं हि उं सीः ॥1॥

जिस यज्ञस्थल पर सभी देवगण आनन्दित होते हैं, उस उत्कृष्ट भूमि पर हम यजमान एकत्रित हुए हैं। ऋक तथा सामरूपी मंत्रों से यज्ञ को पूर्ण करते हुए हम धन एवं अन्न से तृप्त होते हैं। यह दिव्य जल हमारे लिए सुख स्वरूप हो। हे दिव्य गुणयुक्त औषधे ! आप हमारी रक्षा करो। हे ! शस्त्र आप इस औषधि की हिंसा न करो।

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु धृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु ।
विश्वउं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि ।
दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा शग्मां परि दधे भद्रं वर्णं पुण्यन् ।।2।।

यजुर्वेद में यज्ञों के माध्यम से कार्य सिद्धि के लिए विधि-विधान अनुसार प्रकृति की स्तुति की गई है। इसमें जल को देवता स्वरूप भी माना गया है। जल की स्तुति एक नहीं, अनेक रूप में की गई है। यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के 34वें श्लोक में जल को अमृत के समान सेवनीय तथा शक्ति बढ़ाने वाला कहा गया है । चौथे अध्याय के 1-2 श्लोक में दिव्य जल को सुख स्वरूप औषधि माना गया है तथा जगत् निर्माण में जल को मातृ रूप माना है। इस प्रकार जल से ही जगत् की रचना का विचार सामने रखा गया है। जल सभी प्रकार की शारीरिक शुद्धि व शक्ति प्रदान करने

वाला है। छठे अध्याय के 17वें श्लोक में मन की शुद्धि के लिए जल की स्तुति की गई है। नवें अध्याय में जल को प्रकृति के पोषक तत्व, अमृत औषधि और अन्नप्रदायक के रूप में स्तुति की है। दसवें अध्याय के 1 से 4 तक के श्लोकों में जल के गुण व महत्व को विस्तार से बताया गया है। प्रथम श्लोक में जल शत्रुओं को नष्ट करने वाला है...ऐसा माना है। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए ही इन्द्र का जल से राज्याभिषेक किया गया था। राष्ट्र प्राप्ति की कामना, राज पद तथा सुख प्राप्ति हेतु भी जल के लिए स्तुति की गई है। धनोपार्जक, ऐश्वर्यपूर्ण, सामर्थ्यवान, ओजस्वी, पराक्रमी और बलिष्ठ योग्य पुरुष के लिए जल की स्तुति तथा आहुति का निर्देश है। चौथे श्लोक में जल को सूर्य की कान्ति से उत्पन्न सूर्य के समान तेजस्वी तथा मानव को आनन्द देने वाला कहा गया है।

''आप: अत्यन्त बलशाली, महान् पराक्रमी और राष्ट्र प्रदाता है। अत: हे जलदेव ! पुरुषों का पोषण करने वाले, उन्हें धारण करने वाले, विद्या एवं सभी धर्मों के ज्ञाता तथा इन गुणों से युक्त धर्म पुरुष को राष्ट्र प्रदान करें।''

हे मधुर जल कणों ! राक्षसों से रक्षा करने वाले क्षत्रिय (रक्षक) में क्षात्रबल को स्थापित करते हुए आप इस स्थान पर प्रतिष्ठित हों। आप राष्ट्र प्रदान करने में समर्थ हैं। सोलहवें अध्याय के 12, 14, 15, 17 तक के यज्ञ मंत्रों में दिव्य जल को फलदायक, तृप्तिदायक, रोगों का शमन करने वाला, कल्याणकारी, सुखकारी, अन्न व बल प्रदान करने वाला, श्रेष्ठ, रमणीय दृश्य तथा दिव्यदृष्टि प्रदान करने वाला, स्नेह, ममत्व और गतिमान रस से गतिमान बनाने वाला शान्तिप्रद मानकर स्तुति की गई है।

अथ षष्ठोअध्याय: के यजु. (225.17) यज्ञ मंत्र में जल स्तुति निम्नवत् हैं :

इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत्।
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्।
आपो मा तस्मादेनसः पवमान चतु॥

हे जलदेवता ! आप जिस प्रकार शरीरस्थ मलों को दूर करते हैं, उसी प्रकार याजक के जो भी निन्दनीय कर्म हैं, 'आप' ईर्ष्या, द्वेष, असत्य भाषण, मिथ्या दोषारोपण

आदि उन सब दोषों को दूर करें। जल एवं वायु अपने प्रवाह से पवित्र करके हमें यज्ञीय प्रयोजन के अनुरूप बनाएँ।

अथ नवमोअध्याय: (362.6 यज्ञ मंत्र) कहता है कि जल के अन्त:स्थल में अमृत तथा पुष्टिकारक औषधियां हैं। अश्व अर्थात् गतिशील पशु अथवा प्रकृति के पोषक प्रवाह, अमृत और औषधि रूपी जल का पान कर बलवान् हों। हे जल समूह ! आपकी ऊंची तथा वेगवान तरंगें हमारे लिए अन्न प्रदान करने वाली बनें।

यजुर्वेद के दशमोअध्याय: (1 से 4 मंत्र तक) में जल के विषय में विस्तृत वर्णन है। कहा है कि देवताओं ने मधुर स्वाद वाले, विशिष्ट अन्न-रस से युक्त राजाओं के द्वारा सेवनीय तथा विवेक प्रदान करने वाले जल को ग्रहण किया। जिस जल से देवताओं के मित्र वरुण ने तथा स्वयं देवताओं ने शत्रुओं को नष्ट करने वाले इन्द्र का राज्याभिषेक किया, उस जल को हम ग्रहण करते हैं।

हे कलकल ध्वनि करने वाली धाराओं ! आप बलवान् पुरुष को उच्च पद पर पहुंचाने तथा राष्ट्र प्रदान करने में समर्थ हैं। इसके लिए आपको आहुति समर्पित है। आप सुखपूर्वक राष्ट्र प्रदान करने वाले हैं। अत: राज्य देने में समर्थ होकर राजपद प्रदान करें। आपके लिए यह आहुति समर्पित है । इस तरह बारम्बार प्रार्थना की गई है कि आप राज्य देने में समर्थ हैं अत: बलवान् सेना से युक्त राज्य प्रदान करें।

हे जल समूह ! आप अर्थोपार्जन करने वाले हैं ; अत: हमें राष्ट्र प्रदान करें। इसके लिए यह आहुति समर्पित है। आप ऐश्वर्य के बल से सामर्थ्यवान् हैं; ओजस्वी और पराक्रमी हैं तथा राष्ट्र देने में समर्थ हैं... इसलिए यह आहुति समर्पित है। आप महान् बल तथा उत्तम सेना से युक्त हैं, अत: राष्ट्र देने में समर्थ हैं। इसलिए भी यह आहुति समर्पित है।

अथर्ववेद

अथर्ववेद में आप: को विशेष महत्व मिला है। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जहां ऋग्वेद का प्रारम्भ अग्नि की स्तुति से हुआ है, वहीं अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के 4-5-6 सूक्त में ही आप: की स्तुति है। अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के छठे सूक्त में 'आप:' को दैवी बताते हुए उनकी शक्तियों और उपयोग पर भी प्रकाश डाला गया है।

जल को यज्ञ, पान और रोगों के शमन तथा भय के निवारण हेतु कल्याणकारी विवेचित किया गया है।

शं न आपो धन्वन्या इः रामु सन्त्वनूप्पाः।
शं नः खनित्रिमा आपः शमु याः कुम्भ आभृताः शिवा नः सन्तु वार्षिकीः।

अर्थात् सूखे प्रान्त रेगिस्तान का जल हमारे लिए कल्याणकारी हो। जलमय देश का जल हमें सुख प्रदान करे। भूमि से खोदकर निकाला गया कुएं आदि का जल हमारे लिए सुखप्रद हो। पात्र में स्थित जल हमें शान्ति देने वाला हो। वर्षा से प्राप्त जल हमारे जीवन में सुख-शान्ति की वृष्टि करने वाला सिद्ध हो।

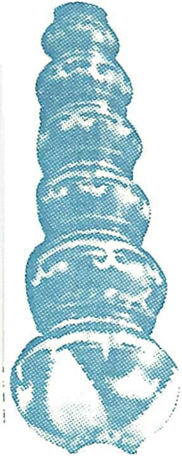

अथर्ववेद के द्वादश काण्ड में उल्लिखित भूमि सूक्त को पृथ्वी सूक्त कहा जाता है। इसमें सभी पंचभूतों को पृथ्वी माता की संतान कहा गया है। इसे मातृभूमि सूक्त भी कहते हैं। इन मंत्रों में भूमि की विशेषताओं एवं उसके प्रति अपने कर्तव्य का बोध कराया गया है। भूमि अथवा मातृभूमि के प्रति कर्तव्य पालन करने वालों के लिए आवश्यक गुण, प्रवृत्ति और मर्यादा का भी उल्लेख है। इस क्रम में अनुभव होने वाली कठिनाइयों तथा उनके निवारणार्थ भी सूक्तों का उल्लेख है।

राष्ट्र प्रेम तथा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को विकसित, पोषित एवं फलित करने के लिए ये सूक्त अत्यन्त उपयोगी हैं।

यास्यां समुद्र उत सिन्धुरोपो यस्यामन्नं कृष्टय: संबभूवु: ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमि: पूर्वपेये दधातु ॥ (सूक्त 3)

हमारी जिस भूमि में सागर, महासागर, नद्य, नदी, नहर, झील, तालाब और कुएं आदि जल साधन हैं; जहां सब भांति के अन्न, फल तथा शाक आदि अत्यधिक मात्रा में पैदा होते हैं; जिसके सभी प्राणी सुखी हैं; जिसमें कृषक लोग, शिल्पकर्म विशेषज्ञ तथा उद्यमी लोग अत्यधिक संगठित हैं... इस प्रकार की हमारी पृथ्वी हमें श्रेष्ठ भोग्य पदार्थ और ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हो। जहां विभिन्न प्रतिभा सम्पन्न वर्ग प्राकृतिक सम्पदा के साथ परस्पर तालमेल के साथ रहते हैं... वहां भूमि सभी प्रकार के वैभव प्रदान करती है।

वायव्य संहिता में भी जलाशय व जल महत्ता का वर्णन मिलता है।

सामवेद संहिता

सामवेद संहिता में जल को सोम का जनक और अग्नि का विद्युत रूप कहा है तथा ऋग्वेद में विश्लेषण रूप में 'संविता' शब्द का प्रयोग किया है। दूसरे अध्याय के तीसरे खण्ड - चौथे श्लोक में जल को पोषक तत्व माना है। 13वें खण्ड के आठवें श्लोक में जल को तृप्ति रूप माना है। अध्याय बीस के सातवें खण्ड के 4,5,6 श्लोकों में जल को सुख का उत्पत्तिकारक, बल, वैभव और ज्ञान प्रदान करने वाला, अत्यन्त सुखकारी, रस, रूप, ऐश्वर्य, रोग निवारण तथा पुत्र-पौत्रों के साथ जीवन पाने के लिए जल की स्तुति की गई है।

भगवान् कृष्ण ने गीता में स्वयं को सामवेद ही कहा है, वह कहते हैं कि मैं वेदों में वेद... सामवेद हूँ। इससे सामवेद की महत्ता और अधिक हो जाती है। इससे जल का महत्व भी बढ़ता है।

पुराण और जल

हमारे पूज्यनीय अठारह पुराणों में जल का महत्व जलदान तथा जल संरक्षण के लिए उपाय और उपयोग कहा गया है। इनमें जल को ही जगत् की उत्पत्ति का आधार माना गया है।

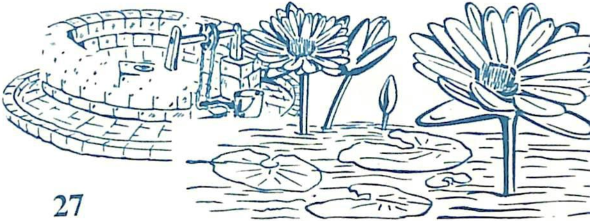

शिव पुराण

रुद्र संहिता में जब शिव ने इच्छा की... कि मैं सृष्टि करूं तो उन्होंने एक "नारायण" नामक जलाशय की रचना की। जिस पर परम पुरुष भगवान विष्णु ने शयन किया। उनकी नाभि से कमल निकला। कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए। उन्होंने देखा कि सब जलमय है,

तो ब्रह्मा जी ने जल को लेकर सृष्टि करने का कार्य प्रारम्भ किया। इस कार्य का विस्तृत वर्णन पठनीय और आनंददायक है।

कोटिरुद्र संहिता में 'अकाल और अक्षय जल' का विस्तृत वृतान्त है। सौ वर्षों के अकाल में गौतम ऋषि के प्रयास से वरुण देवता ने अक्षय जल प्रदान किया था। जिसके लिए गौतम ऋषि ने छः महीने तक तपस्या की और वरुण देवता को प्रसन्न किया। वरुण के बताए अनुसार ही गौतम ऋषि ने भूमि पर एक हाथ का गड्ढा खोद दिया। वरुण ने उसमें अक्षय जल भर दिया। कभी न बीतने वाले पानी से पेड़-पौधों को पानी मिलने लगा; गौएं अक्षय जल पीकर स्वस्थ होने लगी...तथा पलायन कर गए पुरुष, महिला और साधु-संत वापस बसने लगे। नष्ट हुई प्राकृतिक वनस्पति, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, वृक्ष-लताएं, खेती, अन्न-धान, फल-फूल और वन आदि सभी पुनः लहलहाने लगे। इस संयोग से अनावृष्टि वहां के लिए दुःखदायिनी नहीं रह गई। वहां सभी प्रकार का आनन्द हो गया।

उमा संहिता में कहा है कि जलदान सबसे श्रेष्ठ है। जलदान सब दानों में उत्तम दान है ; क्योंकि जल समस्त जीवनधारियों को तृप्त करने वाला... जीवनदाता कहा गया है। बड़े स्नेह के साथ अनिवार्य रूप से पौशाला चलाकर दूसरों को पानी पिलाने का प्रबन्ध कर जलदान करना चाहिए। उमा संहिता में जलाशय निर्माण के संबंध में तालाब, कुएं और बावड़ी बनवाने के महत्व व पुण्य आदि का विस्तार से वर्णन है।

जगत् निर्माण में सक्षम माता के समान हे जल ! आप हमें पवित्र करें। घृत से पवित्र जल हमें योग्य व पवित्र बनाए। तेजयुक्त होता हुआ जल हमारे सभी पापों का निवारण करे। शुद्ध स्नान और पवित्र आचमन के उपरान्त हम जल से बाहर आते हैं। हे क्षौम वस्त्र ! आप दीक्षणीयेष्टि तथा उपसदिष्टि के देवताओं के लिए शरीर के समान प्रिय हैं। अत: हम कोमल होने के कारण सुखकर तथा मंगल करने वाले कान्तियुक्त परिधान को धारण करते हैं।

पद्म पुराण

सृष्टि खण्ड के प्रथम श्लोक में उल्लेख है कि जल व सरोवर चन्द्रमा के समान इतने उज्ज्वल और स्वच्छ हैं कि इनमें हाथी की सूंड के समान आकार वाले नाकों के इधर-उधर वेगपूर्वक चलने-फिरने से फेन पैदा होता रहता है। ब्रह्मा जी के प्रादुर्भाव की कथा में भी इसका उल्लेख है ।

वार्ता में लगे हुए व्रत-नियम-परायण श्रेष्ठ ब्राह्मण जिसका सदा सेवन करते हैं, ओंकार जप से विभूषित त्रिभुवन गुरु ब्रह्माजी ने जिसे अपनी दृष्टि से पवित्र किया है, जो पीने में स्वादिष्ट है और अपनी विशालता के कारण रमणीय जान पड़ता है... ऐसे पुष्करतीर्थ का पापहारी जल हम लोगों को पवित्र करे।

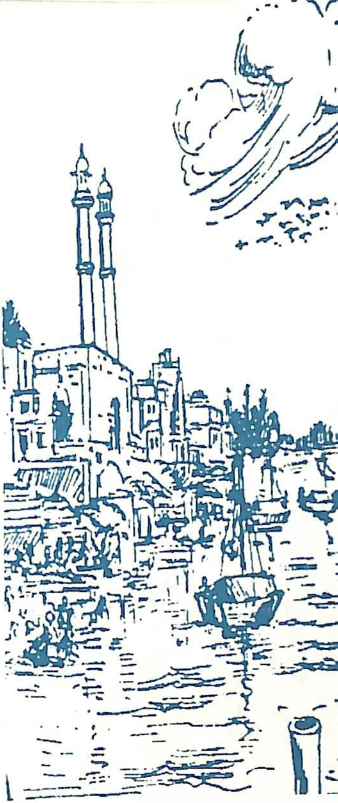

जगत् पिता ब्रह्मा जी की तपोभूमि पुष्कर तीर्थ भारतवर्ष में ही है। ब्रह्मा जी का सर्वमान्य मंदिर भी विश्व में एक ही है… राजस्थान के जिला अजमेर में स्थित पुष्कर का मंदिर! इसके सरोवर में स्नान-दान, आचमन और दर्शन का बड़ा महत्व है। यहां प्रतिदिन हजारों की संख्या में देशी-विदेशी श्रद्धालु आते हैं, निवास करते हैं… भारतीय दर्शन का आनन्द लेते हैं।

सृष्टि खण्ड और उत्तर खण्ड में जल संबंधी नाना प्रकार के व्रत, अनुष्ठान, स्नान, तर्पण और तड़ाग की प्रतिष्ठा के साथ-साथ पोखरे खुदवाना, पौशाला- प्याऊ चलाना, तडाग-जलाशय निर्माण की महिमा तथा जलदान का विस्तार से वर्णन किया गया है। जलाशय निर्माण व जलदान अनमोल बताया गया है। कहा गया है कि तालाब बनवाने और उसके जल से मिलने वाले पुण्य का मूल्य किसी अन्य दौलत से भारी ही रहता है।

ब्रह्म पुराण

नैमिषारण्य में सूत जी ने पुराण का आरम्भ करते हुए नैमिषारण्य वन का उल्लेख कुछ यूं किया है - "परम पुण्यमय पवित्र नैमिषारण्य क्षेत्र में भांति-भांति के पुष्प, वृक्ष, पक्षी, जीव-जन्तु तथा अनेक पवित्र जलाशय तथा बहुत सी बावड़ियां इस वन को विभूषित करती हैं। आगे के अध्यायों में विभिन्न प्रकार से जल का महत्व एवं मध्यकेसर, मेरुकुण्ड, सप्तर्षिकुण्ड, ब्रह्मसर, विरलदण्डकुण्ड, अ[illegible]मुखसर, घर्घरिकाकुण्ड, श्मशानस्तम्भकूप, क्षीरसर, कल्पसर, सप्तकुण्ड और इन्द्रद्युम्न सरोवर जैसे अनेक तीर्थों का उल्लेख है। कहा गया है कि इन तीर्थों में विधिवत् स्नान... देवता, ऋषि, मनुष्य तथा पितरों का तर्पण, देवताओं का पूजन एवं रात्रि विश्राम करने से मनुष्य अश्वमेध यज्ञ का पुण्य प्राप्त करता है तथा पाप मुक्त होता है।

अग्नि पुराण

अग्नि पुराण के 64वें अध्याय में कुएं, बावड़ी, पोखर, तालाब आदि की प्रतिष्ठा की विधि का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। अन्य अध्यायों में जल की महिमा का वर्णन है।

विष्णु पुराण

विष्णु पुराण में मनुष्य हेतु जल के उपयोग संबंधी नियम बताए गए हैं। प्रत्येक अध्याय में उनकी पालना का अलग-अलग फल भी बताया गया है।

नारद पुराण

नारद पुराण के पूर्वभाग-प्रथम पाद में तड़ाग-निर्माण जनित पुण्य के विषय में राजा वीरभद्र की कथा कंगाल से लेकर राजा तक ...सभी के लिए प्रेरणादायी है। जो स्वयं अथवा दूसरे कें द्वारा तालाब निर्माण करतां है, उसके पुण्य की संख्या बताना असम्भव बताया गया है। यदि एक राही भी पोखर का जल पी ले, तो उसे बनाने वाले के सब पाप अवश्यमेव नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य जल का संग्रह एवं संरक्षण करता है, सभी पापों से छूट कर सौ वर्ष तक स्वर्गलोक में निवास करता है। जो मानव तालाब खुदवाने में अपनी शक्तिभर सहायता करता है और जो उससे संतुष्ट होकर दूसरों को प्रेरणा देता है... वह भी पोखरे बनाने का पुण्यफल पा लेता है। जो सरसों के बराबर मिट्टी भी तालाब से निकालकर बाहर फेंकता है, वह अनेक पापों से मुक्त होकर सौ वर्षों तक स्वर्ग में निवास करता है। यह सनातन् श्रुति है। तड़ाग निर्माण से एक छोटी चिड़िया, वराह, काला पक्षी, हाथी, मंत्री, बुद्धिसागर तथा राजा वीरभद्र... सभी को समान पुण्य प्राप्त हुआ।"

कहा है कि कासार (कच्चे पोखरे) बनाने पर.... तड़ाग (पक्के पोखरे) बनाने की अपेक्षा आधा फल प्राप्त होता है। कुएं बनाने पर एक-चौथाई फल जानना चाहिए । बावड़ी बनाने पर कमलों से भरे हुए सरोवर के बराबर पुण्य प्राप्त होता है। भूपाल ! नहर निकालने पर बावड़ी की अपेक्षा सौ गुणा फल प्राप्त होता है। धनी पुरुष पत्थर से तालाब बनावे और गरीब पुरुष मिट्टी से बनावे तो उन दोनों को समान फल प्राप्त होता है। ब्रह्मा जी का यही कथन है। धनी पुरुष तड़ाग बनवाता है और गरीब कुआं बनवाता है। दोनों को समान फल मिलता है। उत्तर भाग में तीर्थों की महिमा बताते हुए विभिन्न तालाबों की महत्ता का वर्णन भी नारद पुराण में है।

काशी में भद्रदेह नामक तालाब, इन्द्रद्युम्न सरोवर तथा पुष्कर और कुरुक्षेत्र में पहले पुण्यमय ब्रह्मसरोवर के प्रकट होने का उल्लेख है; तत्पश्चात् वहां परशुरामकुण्ड बना और उसके बाद यह क्षेत्र... कुरुक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस क्षेत्र के विविध सरोवर व कुण्डों का वर्णन नारद पुराण में है।

भविष्य पुराण

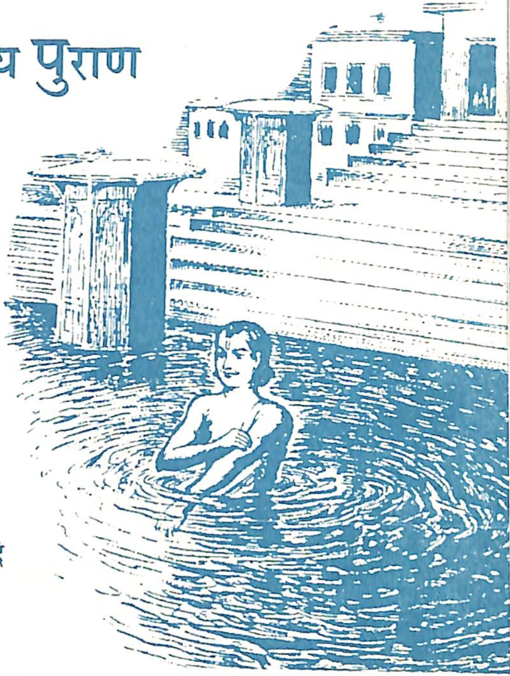

इसके मध्यम पर्व, भाग द्वितीय में जलाशय आदि का प्रतिष्ठा-मुहूर्त एवं प्रतिष्ठा-विधि का विस्तार से वर्णन मिलता है। जलाशय निर्माण के लिए छः मास नियत किए गए हैं। जब तक भगवान विष्णु शयन नहीं करते, तब तक ही जलाशय प्रतिष्ठा आदि कार्य करने चाहिए।

शुक्र, गुरु, बुध तथा सोम - ये चार वार शुभ हैं। जिस लग्न में शुभ ग्रह स्थित हो एवं शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ती हो, उस लग्न में जलाशय की प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी तथा पूर्णिमा तिथियां उत्तम हैं। प्राण-प्रतिष्ठा एवं जलाशय आदि कार्य शुभ मुहूर्त में विधिपूर्ण ही शुरू करने चाहिए।

भविष्य पुराण के उत्तर पर्व में जलधेनु-दान के प्रसंग में महर्षि मुद्‌गल का आख्यान मिलता है। जलधेनु की महिमा के लिए मुद्‌गल-ऋषि ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहा था "हे मनुष्यों ! मैं पुकार-पुकार कर कहता हूं कि आप लोगों को दोनों लोकों में कल्याण प्राप्त करने के लिए श्री विष्णु भगवान्‌ की आराधना और जलधेनु का दान करना चाहिए। अपने कष्टों के निवारण के लिए यही श्रेयस्कर उपाय है।"

स्कन्द पुराण

इस पुराण के अनुसार जलाशय निर्माण का सभी के लिए एक समान महत्व कहा गया है। जलाशय के निर्माण में ईश्वरीय शक्ति, शक्तिस्वरूपा जगत्जननी देवी, देवता, दानव, राजा और प्रजा सभी का यथायोग्य योगदान कहा गया है । जलाशय, सरोवर, तालाब, कुण्ड, बावड़ी, कुआं आदि विविध नाम जल संरचनाओं के ही नाम हैं। इसका विस्तृत विवरण इस पुराण में मिलता है।

वैष्णवखण्ड (श्री अयोध्या माहात्म्य) में ब्रह्माजी द्वारा मानसरोवर ब्रह्मकुण्ड निर्माण: क्षीरोकतीर्थ- सीताकुण्ड, बृहस्पतिकुण्ड और रुक्मिणी आदि कुण्डों का महत्व ... घोषार्क तीर्थ में रतिकुण्ड, कुसुमायुधकुण्ड, क्षीरकुण्ड, हनुमत्कुण्ड, विंभीषणकुण्ड तथा गयातीर्थ में गयाकूप और भरतकुण्ड का वर्णन मिलता है।

ब्रह्म खण्ड (सेतु माहात्म्य) में सीता सरोवर, पम्पा सरोवर, क्षीर सरोवर, मंगल, अमृतवापी, रामकुण्ड, लक्ष्मणतीर्थ, लक्ष्मीतीर्थ, चक्रतीर्थ, विश्वतीर्थ, गन्धमादन तीर्थ; नगर खण्ड में अगस्त कुण्ड, देवी कुण्ड, राजवापी और प्रभास खण्ड में सुकन्या सरोवर तथा प्रभासखण्ड (द्वारकामाहात्म्य) में गोपी सरोवर, मसीरपो, ब्रह्मकुण्ड, चन्द्रसरोवर, इन्द्र सरोवर, महादेव सरोवर, गौरी सरोवर और वरुण सरोवर आदि का वर्णन किया गया है। इस पुराण में अन्य कई जल तीर्थों का भी विस्तार से वृतान्त दिया गया है।

मनुस्मृति

मनुस्मृति को धर्म शास्त्र भी कहा गया है। हमारे समाज के लिए सर्वप्रथम नीति व नियम भगवान् मनु ने ही बनाए । आधारभूत पंचमहाभूतों द्वारा अपने को संरक्षित करते हुए मनुष्य इनका संयमित उपयोग... उपभोग करते हुए जीवन निर्वाह करे; उनके बनाए उपदेश व नियम ऐसा करने का निर्देश देते हैं।

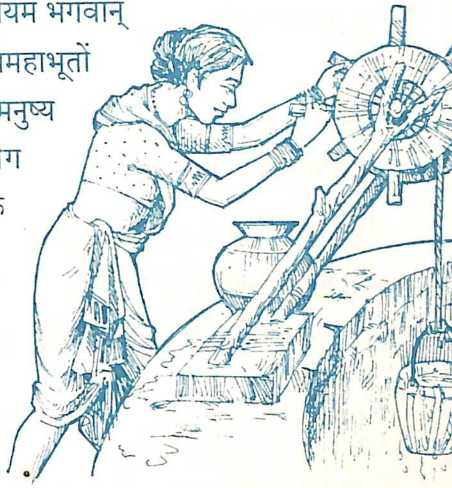

भगवान् मनु ने प्रकृति से लेकर मानव जीवन हेतु समाजोपयोगी आवश्यक नियम बनाए थे। हमारा भारतीय समाज उत्तरोत्तर किस प्रकार प्रगति को प्राप्त हुआ ? वह सामाजिक और धार्मिक नियम क्या थे, जो हमें उच्चतम जीवन जीने की कला प्रदान करते थे? यह सब वर्णन मनुस्मृति में है। उन्होंने कहा है :

आसीदितं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् ।
अप्रतक्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः ।।

ततः स्वयं भूर्भगवानव्यक्तो व्यञ्जयन्निदम् ।
महाभूतादि वृत्तौजाः प्रादुरासीत्तमोनुदः ।।

पहले यह संसार तम प्रकृति से घिरा था। कुछ भी ऐसा प्रत्यक्ष ज्ञात नहीं था, जिससे तर्क द्वारा लक्षण स्थिर कर सके। सभी ओर अज्ञान और शून्य अवस्था थी। इसके बाद प्रलयावस्था का विनाशकारी लक्षण दिखे। सृष्टि के सामर्थ्य से युक्त स्वयंभू

भगवान् महाभूतादि "पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु" पंच-तत्वों का प्रकाश करते हुए प्रकट हुए। यहीं से सृष्टि रचना का प्रादुर्भाव हुआ। प्रकृति ने निरंतर जारी प्रक्रियाओं से प्राकृतिक संरचना को स्वरूप दिया और इस प्रकार इस अद्भुत रचना संसार का निर्माण हुआ। इस प्रक्रिया में जल की अपनी नितांत अनोखी व महत्वपूर्ण भूमिका रही। जल और वायु के योग से समस्त जीव-जगत् उत्पन्न हुआ। इसका मनु-स्मृति के प्रथम अध्याय में विस्तार से वर्णन है।

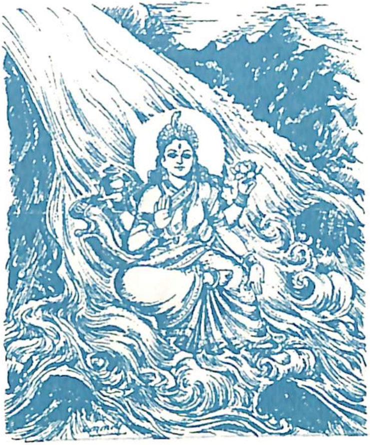

मनु जी के अनुसार (अध्याय तीन):

स्रोतसां भेदको यश्च तेषां चावरणे रतः।...

नदी के बहाव को दूसरी ओर ले जाने वाले अथवा उसके प्रवाह को रोकने वाले व्यक्ति को दण्ड देने का नियम था और उसकी पालना भी होती थी।

मनु-स्मृति के सातवें अध्याय (75-76) में कहा है कि किसी भी दुर्ग को अस्त्र-शस्त्र, धन-धान्य, वाहन, ब्राह्मण, शिल्पी, यन्त्र, तृण और जल से परिपूर्ण होना चाहिए। ऐसे दुर्ग को पर्याप्त खाई, सभी ऋतुओं के फल-फूल और निर्मल जल से भरे हुए कुओं तथा बावड़ियों से युक्त होना चाहिए।

नौवें अध्याय (श्लोक 279) में लिखा गया है :

तड़ागभेदकं हन्यादप्सु शुद्धवधेत वा।

यद्वापि प्रतिसंकुर्याद्दाप्यस्तूत्तमसाहसम्॥

तालाब को किसी प्रकार से नष्ट करने वाले को जल में डुबोकर अथवा कोई बड़ा दण्ड देकर मार डालना चाहिए। यदि वह नष्ट की हुई वस्तु को दुरुस्त कर दे तो उसे उत्तम साहस का दण्ड दें।

यस्तु पूर्वनिविष्टस्य तडागस्योदकं हरेत्।

आगमं वाप्यपां भिद्यात्स दाप्यः पूर्वसाहसम्॥ (281 श्लोक)

जो सर्वसाधारण के उपकारार्थ बने हुए तालाब के जल को खराब करे, ले लेवे अथवा तालाब में विघ्न डाले... आगे के रास्ते को बन्द करे तो राजा उसे प्रथम साहस का दण्ड दे।

ग्यारहवें अध्याय (163वां श्लोक) में लिखा है :

...कूपवापीजलानां च शुद्धिश्चान्द्रायणं स्मृतम्॥

अर्थात् कुआं और बावड़ी का जल चुराने वाला चन्द्रायण व्रत करने से शुद्ध होता है।

जल के अनुशासित उपयोग का निर्देश भी मनुस्मृति में है। कहा है कि यदि दूसरे के बनाए हुए जलाशय में स्नान करने का अवसर आ पड़े तो मिट्टी के पांच लोटे

निकालकर स्नान करे। याज्ञवल्क्य जी ने कहा है : सोना व चांदी, जल और अग्नि के संयोग से उत्पन्न होते हैं और इन्हीं के द्वारा शुद्ध भी होते हैं।

धरती पर जल यदि अपवित्र वस्तुओं से मिला न हो; सुगन्ध, वर्ण और रस से युक्त हो और जो इतना हो कि गाय अपनी प्यास बुझा सके तो उसे शुद्ध समझना चाहिए। निर्मली फल जल को शुद्ध करने वाला होता है।

लगभग सभी अध्यायों के कई श्लोकों में जल से संबंधित नियम, धर्म, व्रत, अनुष्ठान, आतिथ्य आदि में जल उपयोगिता के विषय में कहा गया है। मनुस्मृति में जल से संबंधित जितने अच्छे नियम-उपनियम थे; उतने आज के आधुनिक समाज में दिखाई नहीं देते। इसलिए आज मनुस्मृति को स्मृति में बनाए रखना जरूरी है।

महाभारत

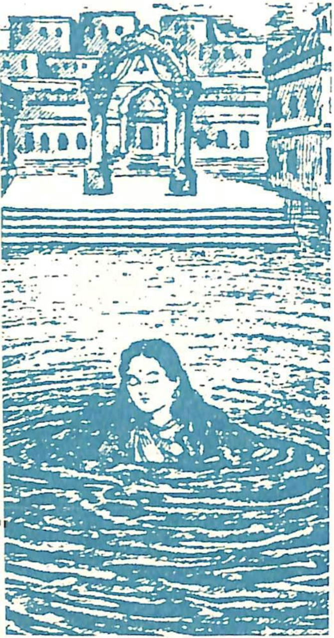

जलाशय निर्माण का महत्व एवं फल के विषय में युधिष्ठिर के पूछे जाने पर भीष्म जी ने विस्तारपूर्वक बताया : (अनुशासन पर्व) " जहां का दृश्य सुन्दर हो, जहां अन्न की उपज अधिक होती हो, जो नाना प्रकार के धातुओं से विभूषित एवं विचित्र दिखलायी देती हो तथा जहां हरेक प्रकार के प्राणी निवास करते हों... वही भूमि जलाशय निर्माण हेतु उत्तम है। उसमें तालाब एवं सब प्रकार के जलाशय बनवाना उत्तम तीर्थ के समान हैं।

तालाब बनवाने वाला मनुष्य तीनों लोकों में सर्वत्र पूज्य होता है। तालाब... मित्र के घर की भांति उपकारी, सूर्य देवता को प्रसन्न करने तथा देवताओं को पुष्ट करने वाला है। पोखरा खुदवाना अपनी कीर्ति फैलाने का

सर्वोत्तम उपाय है। इससे धर्म, अर्थ और काम रूपी फल की प्राप्ति होती है। तालाब बनवाने का पुण्य एक महान् कर्म... क्षेत्र के समान है।

तालाब चारों प्रकार के प्राणियों के लिए बहुत बड़ा जीवनाधार होता है। देवता, मनुष्य, गन्धर्व, पितर, नाग, राक्षस तथा समस्त स्थावर प्राणी जलाशय का आश्रय लेते हैं। अत: जिस खुदवाये पोखरे में बरसात भर पानी रहता है, उसे खुदवाने वाले को अग्निहोत्र का फल प्राप्त होता है। जिसके तालाब में शरद्‌काल तक पानी ठहरता है, उसे एक हजार गोदान का फल प्राप्त होता है। जिसके जलाशय में हेमन्त तक पानी रुकता है, उसे सुवर्ण दक्षिणा यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है। जिसके तालाब में माघ-फाल्गुन तक जल रहता है, उसे अग्निहोत्र यज्ञ का फल मिलता है। जिसके तालाब का पानी चैत्र-वैशाख तक समाप्त नहीं होता, वह अतिरात यज्ञ का फल प्राप्त करता है तथा जिसके तालाब का जल जेठ-आषाढ़ में भी मौजूद रहता है, उसे तो अश्वमेध-यज्ञ सरीखा फल प्राप्त होता है। जिसके खुदवाये जलाशय में गौएं तथा साधु पानी पीते हैं, वह अपने समस्त कुल को तार देता है। जिसके पोखर में प्यासी

गौएं, मृग, पक्षी और मनुष्य जल पीते हैं, स्नान करते हैं, विश्राम करते हैं.... वह अक्षय पुण्य प्राप्त करता है।

पानी दुर्लभ पदार्थ है। परलोक में तो इसका मिलना और भी कठिन है; इसीलिए इस लोक में जल का दान करना चाहिए। जो जल का दान करते हैं, वे ही परलोक में तृप्त रहते हैं। पानी का दान... सब दानों से भारी और सब दानों में श्रेष्ठ है।

शान्ति पर्व में श्रीकृष्ण अपने भिन्न नाम की व्याख्या करते हुए अर्जुन को बताते हैं कि नर से उत्पन्न होने के कारण जल को नार कहते हैं। यह नार अर्थात् जल ही पहले मेरा अयन अर्थात् 'निवास स्थान' था, इसीलिए मैं 'नारायण' कहलाता हूं। भीष्म पितामह ने अपने अंतिम समय में पृथ्वी में उपलब्ध वस्तुओं में से केवल दिव्य जल ही ग्रहण किया था। वह दिव्य जल वीर धनुर्धर अर्जुन ने दिव्य तरीके से जलस्तुति कर उपलब्ध कराया था।

विदुर नीति

महात्मा विदुर जी ने जल का नीतिगत एवम् उपदेशात्मक संदेश दिया है। विदुर नीति के दूसरे अध्याय के 37वें श्लोक में 'जल' (बादल) को पशुओं का रक्षक माना है, तो तीसरे अध्याय में अतिथि स्वागत में जल को प्राथमिकता दी है। चौथे अध्याय में जलहीन सरोवर को पशु-पक्षी व समाज के लिए उपयोगी नहीं माना है। 38वें श्लोक में कहा है कि बढ़ती विषयी प्रवृत्ति के कारण मनुष्य की बुद्धि वैसे ही नष्ट हो जाती है, जैसे फूटे घड़े में से जल। पांचवें अध्याय के 33वें श्लोक में नित्य स्नान के महत्व को बताया गया है। सातवें अध्याय के 70वें श्लोक में कहा है कि जल-ग्रहण करने से किसी व्रत व उपासना का नाश नहीं होता। आठवें अध्याय के 21-22वें श्लोक में विदुर जी ने जीवात्मा को एक नदी रूप माना है। नदी को पूरे जीवन से जोड़ते हुए जल को तीर्थ कहा है। विदुर नीति के अनुसार मनुष्य अपनी पांचों इन्द्रियों के जल से परिपूर्ण जीवन नदी के दुर्गम प्रवाह के बीच से धर्म की नौका को पार ले जाता है।

चाणक्य नीति

आचार्य चाणक्य के नीतिगत सूत्रों से हमारा समाज सदैव लाभान्वित होता रहेगा। चाणक्य नीति समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अनुकरणीय है।

चाणक्य नीति (पांचवें अध्याय का 17वां सूत्र) में कहा है :

नास्ति मेघसमं तोयं।

बरसते हुए बादलों के जल के समान कोई दूसरा जल स्वच्छ नहीं होता।

छठे अध्याय के तीसरे सूत्र में कहा है :

...नदी वेगेन शुद्धयति।।

जो नदियां धीरे-धीरे बहती हैं, उनका पानी सदैव अशुद्ध और गंदा दिखाई देता है। वेग से बहने वाली नदियां स्वत: स्वच्छ हो जाती हैं।

सातवें अध्याय (14वां सूत्र) में कहा है :

...तड़ागोदरसंस्थानां परिस्राव इवाम्भसाम ।।

अर्थात् लंबे समय के बासी पानी से भरे हुए तालाब को सड़ांध और कीचड़ से बचाने के लिए आवश्यक है कि उसके पानी को बदला जाये।

आठवें अध्याय का 7वाँ सूत्र :

अजीर्णे भेषजं वारि, जीर्णे वारि बलप्रदम् ।
भोजने चामृतं वारि, भोजनान्ते विषं भवेत् ।।

बदहजमी, अजीर्ण-अपच हो जाने पर जल का सेवन दवाई का काम करता है । भोजन के बीच में पानी पीना अमृत सदृश होता है। इससे भूख बढ़ती है, भोजन रुचिकर लगता है और सहजता से पचता है, किन्तु भोजन के तत्काल बाद जल पीने से वह विष के समान हानिकारक होता है। हालांकि इस पर आयुर्वेद की राय में कुछ भिन्नता है, उसने भोजन के बीच जल पीने को अस्वास्थ्कर माना है । महात्मा चाणक्य ने 17वें सूत्र में कहा है-

'शुद्धं भूमिगत तोयं'...

पृथ्वी के गर्भ से निकलने वाला जल शुद्ध और पवित्र होता है।
जल औषधि भी है और विष भी है।

ग्यारहवें अध्याय के सोलहवें सूत्र में जल स्थान को नष्ट करने वालों को लताड़ा गया है। कहा है कि बावड़ी, कूप, तालाब, बाग और देव मन्दिरों को तोड़ने-फोड़ने में संकोच न करने वाला ब्राह्मण अपने निकृष्ट कर्मों के कारण म्लेच्छ कहलाता है।

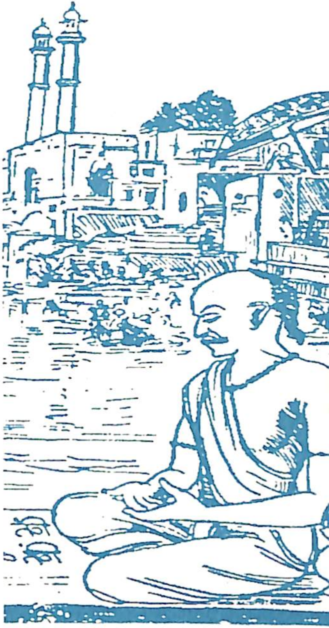

14वें अध्याय (प्रथम सूत्र) में तीन चीजों की महिमा का वर्णन किया है। कहा है कि सच्चे अर्थों में रत्न अर्थात मूल्यवान पदार्थ हैं- जल, अन्न और मधुर तथा हितकारी वचन।

17वें अध्याय का सातवां सूत्र अन्न और जल के दान को अप्रतिम दान कहता है। भूखे को भोजन करा देना और प्यासे को जल दे देने जैसा दूसरा कोई दान नहीं है।

सुभाषित मालिका :

सुभाषित शब्द का तात्पर्य है, 'सुन्दर रूप'

...कथन सुष्ठु भाषितम् सुभाषितम्।

इसमें हमारी संस्कृति के लोकाचार, रीति-रिवाज और मान्यताओं की झलक दिखाई देती है। जल के विषय में बहुत सी सुभाषित सूक्तियां प्रचलित होकर आज लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होती हैं।

ऐसी ही एक सुंदर सूक्ति है :

आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव।

अर्थात् जिस तरह बादल बरसने के लिए ही समुद्र से पानी लाते हैं ; उसी तरह सज्जन भी दान करने के लिए ही कुछ ग्रहण करते हैं।

चाणक्य का कथन उत्तम ही है कि सत्पुरुषों के धनहीन होने पर भी याचक उनसे आशा रखते हैं। नदी जिस मार्ग में बहा करती है, उस मार्ग के सूख जाने पर भी जल चाहने वाले कुआं वहीं खोदते हैं। कहते हैं कि भूखे लोग व्याकरण नहीं खाते और प्यासे लोग काव्यरस नहीं पीते। बूंद-बूंद मिलकर समुद्र बनता है। एक-एक बूंद गिरती रहे, तो घड़ा भर जाता है। सच ही है कि प्यास पानी से ही बुझती है, दूध और शहद से नहीं।

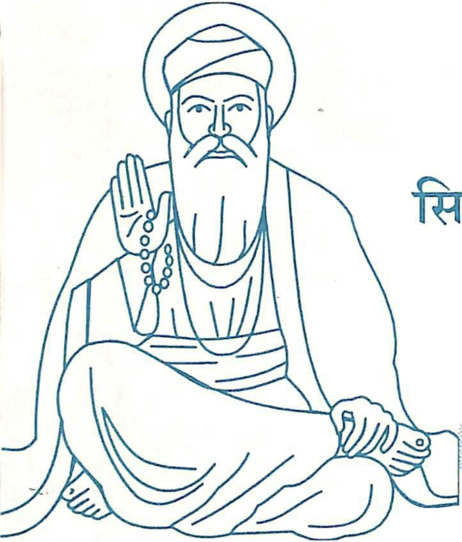

सिक्ख धर्म

गुरु ग्रंथ साहिब में जल को आर्थिक समृद्धि का द्योतक, जीवनदाता और भक्ति रूप माना है। कहा है कि बिना पानी खेती सूख जाती है और उसका अच्छा मूल्य नहीं मिलता। वायु को गुरु, पानी को पिता तथा धरती को माता माना गया है। पानी से ही सारे जीव बने हैं। बिना पानी सभी जीव मर जाते हैं। ईश्वर ही पानी है। ईश्वर ही मछली है। ईश्वर ही जाल है। ईश्वर ही मछुआरा है।

गुरु ग्रंथ साहिब में एक जगह लिखा है कि प्रभु इस शरीर को खेत बनाओ। अच्छे कर्मों के लिए प्रेरणा व संस्कार दो तथा भक्ति रूपी जल से सिंचित करो।

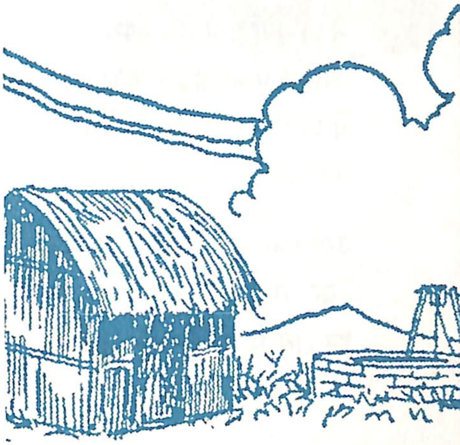

अमृतसर दुनिया में जाना-पहचाना तीर्थ स्थल है। यह पंजाब राज्य में है। यहां का गुरुद्वारा जन मानस में स्वर्ण मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। पवित्र सरोवर से सुसज्जित अमृतसर अपने नाम से ही मनुष्य के रोम-रोम को पुलकित करने वाला है। 'सर' माने तालाब होता है। 'अमृतसर' यानी अमृत सरीखे पानी का तालाब। इस विषय में लोकोक्ति है कि कभी यहां जंगल था। उस जंगल में पानी का एक तालाब था। उसका पानी अमृत के समान था। इसलिए इस स्थान को अमृतसर कहने लगे। बाद में यहां गुरुद्वारा बना और आबादी भी बसी। कालांतर में इस तालाब के नाम से शहर का नाम ही 'अमृतसर' हो गया।

अमृतसर की तरह ही देश में बहुत से शहरों, कस्बों और हजारों गाँवों के नाम भी 'सर' से जुड़े हैं। इन सभी में कभी न कभी छोटे-बड़े पानी के तालाब अवश्य रहे हैं। इन सब से भारत के जल दर्शन, चिन्तन और दृष्टि का पता चलता है।

इस्लाम धर्म

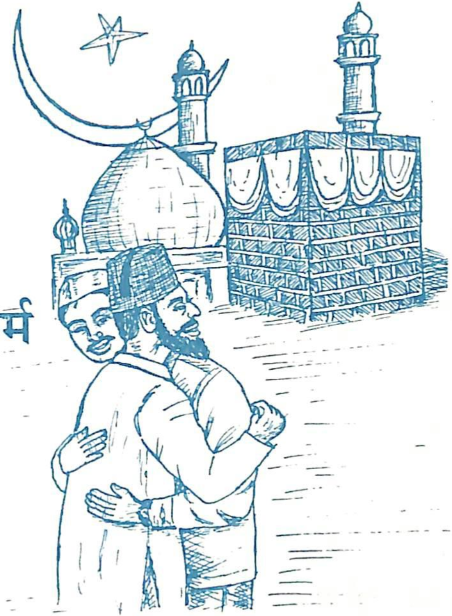

कुरान शरीफ इस्लाम धर्म का सबसे पवित्र ग्रंथ है। यह ग्रंथ सारी दुनिया के मुस्लिम समाज को एक सूत्र में जोड़ता है। कुरान शरीफ में जल के दर्शन, महत्व और उपयोग के विषय में विस्तार से लिखा हुआ है। हम यहां कुछ आयतों का संदर्भ देने की कोशिश कर रहे हैं :

नमाज अदा करने से पूर्व शरीर को जल से शुद्ध कर लें। नमाज़ से पहले हाथ को कोहनी तक तथा मुंह व एड़ी साफ करें। कुरान में कहा गया है कि बादलों से पानी आना अल्लाह की देन है। पानी से ही पेड़, पौधे, वनस्पति तथा अन्न पैदा होते हैं। अल्लाह बादलों से पानी भेजता है और उसी पानी से नदी बहती है। ये सब अल्लाह की देन है।

अल्लाह ने पानी से ही हर जीव बनाया है। यह अल्लाह ही है, जो रेंगता है... चलता है। कुरान में पानी व जीव के रिश्ते का उल्लेख करते समय अन्य जीवों के लिए पानी को प्राथमिक माना है।

मक्का इस्लाम धर्म का सबसे बड़ा व पवित्र तीर्थ है। यहां की यात्रा करने वाला अपने को बड़ा भाग्यशाली मानता है । उसे हाजी कहा जाता है। प्रति वर्ष लाखों की तादाद में मुस्लिम हजयात्री यहां आते हैं ।

एक प्रसिद्ध संदर्भ है कि एक बार एक महिला जायरीन अपने गोद के बच्चे के साथ यात्रा के लिए गई। रास्ते में बच्चे को प्यास लगी। बच्चा पानी के लिए रोने लगा। जब बहलाने-दुलारने से भी बच्चे ने रोना बन्द नहीं किया तो वह महिला बच्चे को किसी पेड़ की छांव में बैठाकर पानी तलाशने लगी। पानी की तलाश करते-करते वह नजदीक पहाड़ पर जा चढ़ी। इधर बच्चा जोर-जोर से रोने लगा। उसकी आवाज सुनकर महिला

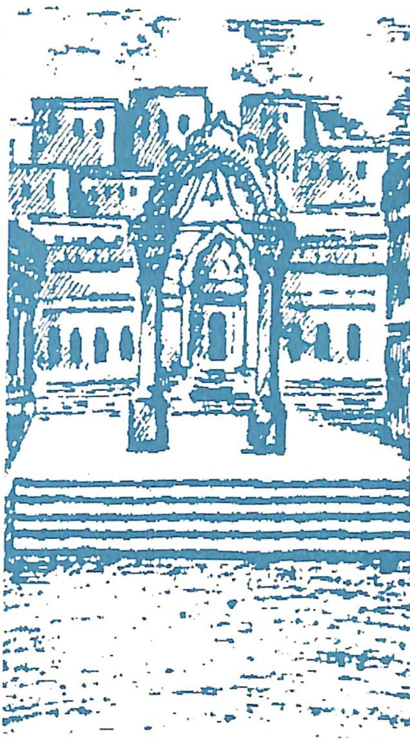

की बेचैनी और बढ़ गई। वह पानी की तलाश में इधर-उधर दौड़ने लगी। काफी भाग-दौड़ करने पर जब उसे पानी नहीं मिला तो वह उदास मन से वापस लौटी। उसने देखा कि जहां बच्चा बैठा रो रहा था, उसी जगह... उसकी ऐड़ी की रगड़ से पानी की एक पतली सी जलधारा बह निकली है। उसने तुरन्त डोली में पानी रोक कर बच्चे को पानी पिला दिया। बाद में उस स्थान पर एक बड़ा तालाब बन गया। एक पवित्र तीर्थ सरोवर के रूप में वह स्थान आज भी विख्यात है। मक्का जाने वाले जायरीन उस सरोवर के जल से अपने को पवित्र करते हैं। वे सभी उस महिला की तरह ही पहाड़ पर इधर-उधर दौड़ते हैं। यह हज यात्रा की एक रस्म सी बन गई है। इसे पानी की तलाश में खुदा का रहमोकरम माना गया है।

इस्लाम में शुद्धता तथा स्वच्छता के लिए जल की पर्याप्त महत्ता बताई गई है। कहा है कि - नमाज़ से पहले नमाजी का पवित्र होना जरूरी है। पानी का महत्व मृत्यु के समय भी है। मुर्दा शरीर दफनाने से पहले स्नान कराया जाता है।

ईसाई धर्म

बाइबल ईसाई धर्म का सबसे पवित्र धार्मिक ग्रंथ है। बाइबल दुनिया के ईसाई धर्म मानने वालों के लिए पूज्य एवं वन्दनीय है। बाइबल ऐसे स्थान पर लिखी गई थी, जहां पर पानी की कमी थी। जाहिर है कि वहां के जीवन में पानी अति महत्वपूर्ण था। वहां के निवासी यह मानते थे कि पानी की कमी की वजह परमात्मा का कोप है। वहां के मसीहा का विचार था कि परमात्मा के क्रोध व सजा के कारण सूखा पड़ता है। बरसात परमात्मा की कृपा से होती है। प्रदूषित पानी को बहुत बुरा व अनुपयोगी माना गया है। पानी को मन व तन की शुद्धि का साधन माना गया है। बाइबल पानी को अमृत के समान कहता है।

बाइबल में जल के संबंध में बहुत विस्तार से लिखा है।

लगभग सभी गिरजाघरों में किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत पानी के द्वारा ही करते हैं। पानी का इस्तेमाल उसके प्रतीकात्मक मूल्यों के लिए किया जाता है। जैसे कि

1. पानी शुद्धता तथा स्वच्छता का प्रतीक है।
2. जिस प्रकार पानी जिस भी वस्तु में डाला जाये ... उसे भर देता है, उसी प्रकार परमात्मा भी अपनी भक्ति में लीन भक्तों को भर देता है।
3. जिस प्रकार पानी हमारी शारीरिक जरूरतों के लिए महत्वपूर्ण है, उसी प्रकार परमात्मा हमारी आध्यात्मिक आवश्यकता है।

अन्य धर्म

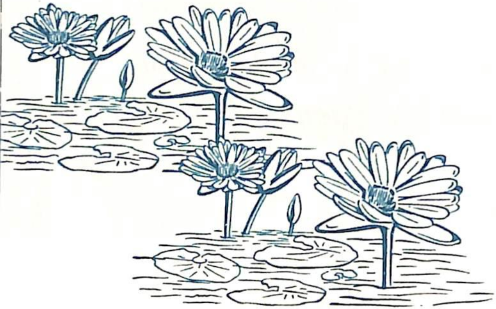

बहाई धर्म

बहाई धर्म में खेती तथा पारिस्थितिकीय सन्तुलन को महत्व दिया गया है। हम जानते हैं कि खेती तथा पारिस्थितिकी के लिए पानी बेहद जरूरी है । इसलिए पानी का महत्व बढ़ जाता है। बहाई धर्म में यह माना गया है कि पानी हमें पर्यावरण से जोड़ने का अच्छा माध्यम है।

> "भगवान् ने पानी बनाया है और वही इसे देता है। अत: मनुष्य की प्यास बुझाने के लिए इसका इस्तेमाल भगवान् की मर्जी से होगा। अगर जल का इस्तेमाल भगवान् की मर्जी के खिलाफ होगा तो मनुष्य ऐसी प्यास का शिकार हो जाएगा... जिसे समुद्र भी नहीं बुझा सकता ।"

□□□

बौद्ध धर्म

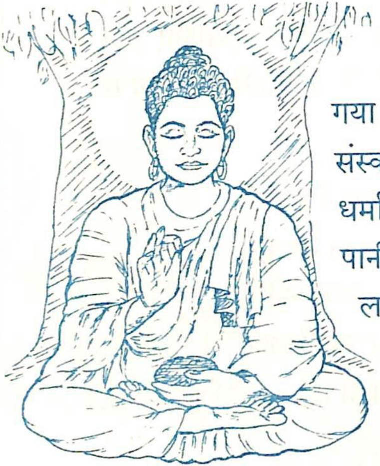

बौद्ध धर्म किसी खास रीति-रिवाज के बंधन से नहीं बंधा है, पर पानी यहां भी महत्वपूर्ण माना गया है। पानी को जीवन से जोड़ा गया है। मृत्यु संबंधी संस्कार आदि कर्म में पानी का बड़ा महत्व है। बौद्ध धर्मावलंबी समुदाय में मृत्यु के समय एक कटोरे को पानी से भरने की प्रथा है। जब कटोरे से पानी छलकने लगता है तो यह माना जाता है कि जैसे नदियों का पानी छलक कर समुद्र में जाता है; वैसे ही परलोक में जाने वाले प्राणी को जल से पूर्ण तृप्ति प्राप्त होती है।

यहूदी धर्म

टोहरा में इस बात का उल्लेख है कि शुद्धता कायम रखने के लिए पानी से सफाई जरूरी है। यह माना जाता है कि पानी शक्तिशाली है। पानी खुदा का ऐसा शस्त्र है, जो किसी के लिए वरदान और किसी के लिए श्राप बन सकता है।

शिन्टो धर्म

इस धर्म में पानी समेत सम्पूर्ण प्रकृति पूजनीय है। पूजा से पहले पानी से अपने आपको स्वच्छ किया जाता है। इस धर्म में जल प्रपातों को भी पवित्र माना गया है। दरअसल शिन्टो धर्म में हर प्राकृतिक चीज पूज्यनीय है और उनमें पानी भी एक है।

पारसी धर्म

स्वयं को स्वत: साफ करने की क्षमता पानी में है। इस क्षमता तथा जीवन के लिए जरूरी होने के कारण पानी महत्वपूर्ण माना गया है। अत: पानी को दूषित होने से बचाना चाहिए। पारसियों में पानी की स्वच्छता का बहुत महत्व है। इस धर्म में पानी में थूकना, नहाना तथा पेशाब करना मना है। मुर्दा शरीर को इसलिए जलाया, दफनाया अथवा पानी में बहाया नहीं जाता, क्योंकि वे आग, पानी, तथा धरती तीनों को शुद्ध मानते हैं।

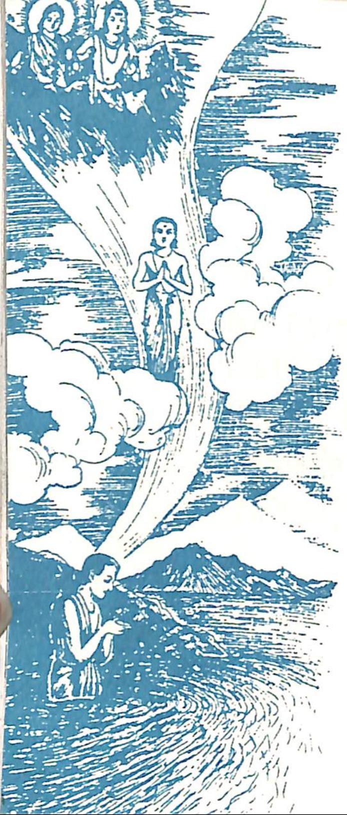

मित्रता का प्रतीक

जल

प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटना है कि एक बार नरसे बाज पठान रेगिस्तान में फंस गया था। उसे वहां प्यास लगी। पानी दूर-दूर तक नहीं था। वह प्यास से बुरी तरह व्याकुल होने लगा और उसकी हालत बिगड़ती गई। वह अचेतन स्थिति में पहुंच गया। उसी रास्ते से नागौर के राजा अमर सिंह राठौड़ अपनी पत्नी के साथ गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति अचेत अवस्था में पड़ा है। उन्होंने उसकी सहायता के लिए अपना रथ रोका। उसके पास गए। उस व्यक्ति ने अचेतावस्था में इशारे से पानी देने की विनय की। उस समय अमर सिंह के पास केवल एक लोटा पानी बचा था और आगे बहुत लम्बा रास्ता तय करना था; बावजूद इसके उस वीर पुरुष ने राही की दुर्दशा देख तुरन्त मानव धर्म

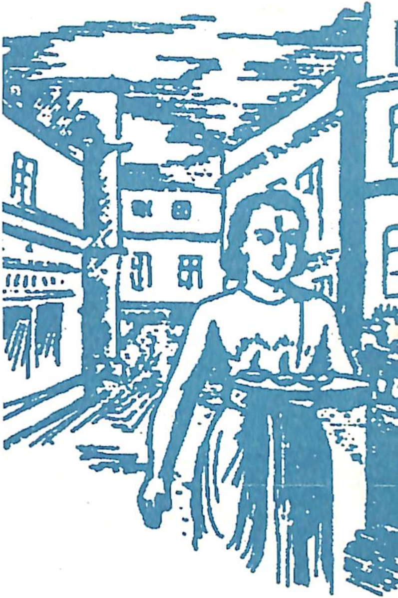

का निर्वाह किया। उसने अपने लोटे का सारा पानी उस अचेत व्यक्ति को समर्पित कर दिया। चेतनावस्था में वापस लौटने पर राही ने अपना परिचय दिया और कहा- "दोस्त, अब यह शरीर तुम्हारा है, जब कभी भी मेरी जरूरत पड़े तो याद करना।"

कुछ समय बाद आगरा में अमर सिंह राठौड़ की हत्या कर दी गई। उसकी लाश को बादशाह के हुक्म से रोक लिया गया। अमर सिंह की विधवा हाड़ा रानी ने अमर सिंह की लाश आगरा से लाने में उसकी सहायता मांगी। नरसे बाज पठान को वह दिन याद आ गया, जब उसने अमर सिंह के हाथ से पानी पिया था और अपना शरीर अमर सिंह की धरोहर माना था। हालांकि पठान की जीत संदिग्ध थी, बावजूद इसके उसने आगरा की ओर कूच कर दिया। आगरा में बादशाह की सेना के साथ युद्ध करते-करते वह मारा गया। पठान ने पानी की खातिर हुई दोस्ती में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

“

पानी जाति और धर्म के बंधन से मुक्त है। पानी सभी का है। चींटी से लेकर हाथी तक सभी का इस पर समान हक़ है। मानवता और सृष्टि की रचना को बनाए रखना ही पानी का गुण है।

”

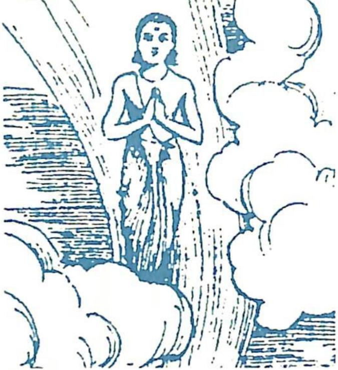

आह्वान

उल्लिखित संदर्भों से स्पष्ट है कि दुनिया में जल की समझ सदियों पुरानी व गहरी है। तरुण भारत संघ द्वारा भारतीय जल दर्शन तथा संस्कृति पर शीघ्र प्रकाश्य अन्य पुस्तकों में आप उक्त संदर्भों का विस्तार पा सकते हैं। धर्म...सम्प्रदाय चाहे कोई भी हो... पानी की महत्ता को नकारना किसी के लिए संभव नहीं है।

यदि आप उक्त उल्लिखित धर्म ग्रंथों का सहज भाव से विस्तृत अध्ययन करें तो पायेंगे कि इन ग्रंथों के जरिए न सिर्फ जल का गुणगान किया गया, बल्कि जल को संरक्षित और समृद्ध बनाये रखने के लिए समुचित नियम-कायदे व दण्ड की भी व्यवस्था की गई। इन्हीं धार्मिक उपदेशों और निर्देशों की अनुपालना करते हुए तत्कालीन राजा-प्रजा.. सभी ने स्वावलंबी जल संचयन ढांचों की रचना की थी।

कुछ दुर्योग से और कुछ मूर्खतावश अपने सदियों के अनुभवों पर जांचे-परखे ज्ञान से विश्वास उठ जाने से आज राज और समाज के साझे उपक्रम नष्ट हो रहे हैं। राज

की समाज में आस्था नहीं बची तो समाज ही राज में आस्था क्यों रखे ? समाज के भीतर भी साझेदारी नष्ट हो रही है।

हास्यास्पद है कि आज जहां पाश्चात्य का जीवन भारत के योग, अध्यात्म और परंपराओं में शक्ति और सुख की तलाश कर रहा है; वहीं भारत पश्चिम के अंधानुकरण में व्यस्त है। समझना होगा कि पूर्व और पश्चिम की धुरी मिल नहीं सकती। भारत का मानस भिन्न है। वह उसी में सुख पा सकता है। पूर्व का सूरज बचपन सा पवित्र होता है। पश्चिम का सूरज अस्ताचल में ही विश्राम पाता है।

आज दुनिया का बाज़ार भारत के प्राकृतिक संसाधनों पर नजरें गड़ाए है। जिन्हें धार्मिक निर्देशों में तनिक भी आस्था हो, उन्हें चाहिए कि वर्तमान का व्यवहार समझें और पूर्वजों का ज्ञान अपने व्यवहार में उतार कर भारत का जलरूपी जीवन बचा लें।

भगवान श्री कृष्ण

नर से उत्पन्न होने के कारण जल को नार कहते हैं। यह नार अर्थात् जल ही पहले मेरा अयन अर्थात् 'निवास स्थान' था। इसीलिए मैं 'नारायण' कहलाता हूं।

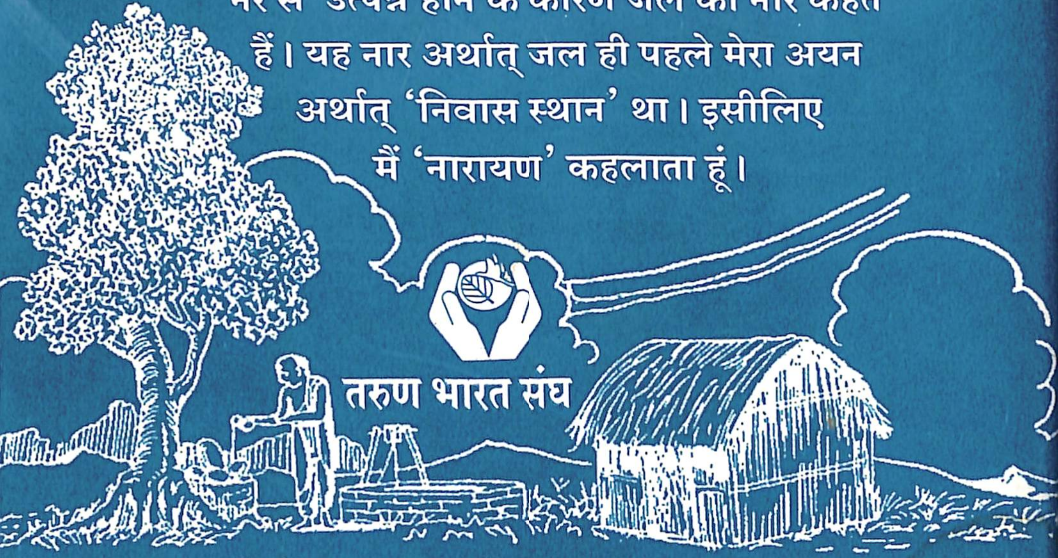

भीकमपुरा-किशोरी, वाया थानागाजी , अलवर-301 022, दूरभाष : 01465-205043